Dr. Gautam Kumar
BA(H) part-I
Paper-II

गाँधीवाद (Gandhism)

गाँधीवाद कोई क्रमबद्ध एवं दार्शनिक आधार पर विकसित विचारधारा नहीं होने के कारण, उसकी कोई सर्वमान्य परिभाषा या अर्थ को स्पष्ट करना कठिन कार्य है। गाँधीजी राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन में व्यस्त रहने के कारण, वे इसे एक क्रमिक विचारधारा के रूप में विकसित नहीं कर पाये। वैसे गाँधीवाद (Gandhism) का तात्पर्य है कि गाँधीजी के विचारों, सिद्धांतों और उनके आदर्शों का समूहीकरण। गाँधी जी के विचारों को लोग गाँधीवाद कहते हैं। वे किसी भी तरह के समस्या का निदान 'सत्य और अहिंसा' के सिद्धांत पर निकालने का प्रयत्न करते थे। गाँधीजी का कहना था कि गाँधीवाद जैसी कोई वस्तु नहीं है और न ही मैं कोई समुदाय चलाना चाहता हूँ। मैंने अपने शाश्वत सत्यों को अपने नित्य के जीवन और प्रश्नों से सम्बद्ध करने का प्रयास अपने ढंग से किया है। आप इसे गाँधीवाद न कहें, इसमें वाद जैसा कुछ भी नहीं है। इस प्रकार गाँधीजी के विचारों को "गाँधीवाद" कहा जा सकता है।

उन्होंने किसी प्रणाली की खोज नहीं की और न ही किसी वाद का संस्थापन ही किया, फिर भी गाँधीजी का एक निश्चित जीवन दर्शन था। उनके पास राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय जटिलताओं के समाधान के लिए कुछ विशेष सिद्धांत एवं कुछ विशेष पद्धति थी। गाँधीवाद की परिभाषा का

Scanned with CamScanner

प्रयत्न करते हुए डॉ० पी. एस. [illegible] लिखते हैं कि, " गाँधीवाद नीतियों, सिद्धांतो, नियमों, आदेशों, निषेधों आदि का सिद्धांत ही नहीं वरन् जीवन का एक रास्ता है। इसके द्वारा जीवन की समस्याओं के प्रति एक नवीन दृष्टिकोण का प्रतिपादन या पुरातन दृष्टिकोण की पुर्नव्याख्या करते हुए आधुनिक समस्याओं के लिए पुरातन हल प्रस्तुत किए गए हैं।"

उन्होंने दक्षिण-अफ्रीका और भारत के जन-आन्दोलनों को एक विशिष्ट पद्धति और दृष्टिकोण से संचालित किया। गाँधीजी ने इतिहास में पहली बार सत्य, अहिंसा और प्रेम के आध्यात्मिक सिद्धांतों का राजनीति के क्षेत्र में इतने विशाल पैमाने पर प्रयोग किया और सफलता भी प्राप्त की। गाँधीजी का दर्शन मार्क्सवाद और लेनिनवाद की तरह नहीं है, परन्तु उनके विचारों में वे समस्त विशिष्टताएँ हैं, जो एक वाद के लिए आवश्यक होती हैं।

गाँधीवाद केवल एक राजनीतिक दर्शन अथवा सिद्धांत ही नहीं है, वह एक सम्पूर्ण सामाजिक जीवन दर्शन है, जो सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था के निर्माण का मानचित्र प्रस्तुत करता है। अर्थात उन्होंने सामाजिक- राजनीतिक चिन्तन का भी निर्माण किया है।

गाँधी जी कभी भी अपने मन में छल-कपट की भावना नहीं रखते थे। गाँधी जी का यह भी मानना था कि व्यक्ति को अपनी इच्छाओं को दायरा। नियंत्रण (कंट्रोल) में रखना चाहिए ताकि सुख का अनुभव कर सके। अतः गाँधी जी के विचारों को गाँधीवाद कहना अनुचित नहीं होगा।